ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 52 कुल पृष्ठ-8 6 से 12 सितम्बर, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 आ.कृ.-04

14 सितम्बर पुण्य तिथि पर विशेष

संस्कृत व्याकरण के तेजस्वी सूर्य स्वामी विरजानन्द

यह सर्व विदित है कि नदी में भयंकर बाढ़ उतर जाने के पश्चात् नदी एकदम शान्त हो जाती है, किन्तु अपने दोनों कगारों पर न जाने कहां कहां का कूड़ा करकट छोड़ जाती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए मुख्य रूप से तीन बार प्रयास किए गए। प्रथम 1757 में बक्सर का युद्ध, द्वितीय 1857 का महान क्रान्तिपूर्ण युद्ध तथा सन् 1947 में अन्ततः विजय श्री प्राप्त होकर यह देश स्वतन्त्र हुआ। पूर्वोक्त शब्दावली के अनुसार सन् 1857 का महान क्रान्तिकारी युद्ध कतिपय ज्ञात अज्ञात कारणों से असफल हो गया। तब इसके पश्चात् सम्पूर्ण देश में एक मुर्दानगी छा गई। पराजित जाति के लिए इससे बढ़कर लज्जा पूर्ण और अन्य कोई कृत्य नहीं होगा। इस क्रान्ति के ठीक 12 वर्ष पश्चात देश के पश्चिमोत्तर प्रान्त में भयंकर दुर्भिक्ष (अकाल काला बुखार) पड़ गया। देश के सभी भागों में इसकी छाया पड़ी और सहस्रों लोग कस्बों ग्रामों को छोड़कर शहरों की ओर आने लगे। इन पंक्तियों के लेखक के पितामह एवं पितामही इन पीड़ापूर्ण दुर्भिक्ष की बातें सुनाया करते थे, जिसके कारण भयभीत होकर रोमांचित हो जाता था। यह दुर्भिक्ष बाढ़ के पश्चात् किनारों का कूड़ा-करकट ही सिद्ध हुआ। इतिहास के जानकार जानते हैं कि इंग्लैंड में बैठी विक्टोरिया रानी ने दुखी, पीड़ित, शोषित भारतीय जनता को शासन सुधार का एक तोहफा देकर आंसू पोछने का कार्य किया, किन्तु बार-बार आंसू क्यों आते हैं, इसके कारणों से अपना मुख मोड़ लिया। सात समुन्द्र पार बैठी महारानी विक्टोरिया द्वारा गुलामों के साथ जो व्यवहार किया गया, वह माता के वात्सल्य, करुणा, त्याग और शान्ति के गुणों के बिल्कुल विपरीत था। विश्व में गुलाम जातियों के साथ ऐसा ही व्यवहार होता है।

ऐसे भीषण समय में स्वामी विरजानन्द की कुटिया के सम्मुख 34-35 वर्षीय हृष्ट-पुष्ट, 6 फुट 2 इंच लम्बा, गौर वर्ण, चमकता हुआ ललाट धारण किए एक संन्यासी उपस्थित हो गया। यहां आने के पूर्व उक्त युवा संन्यासी मथुरा के रंगेश्वर महादेव मन्दिर में आकर कुछ समय ठहरा। इस युवा संन्यासी के वेश का चित्रण करते हुए प्रसिद्ध बंगाली लेखक बाबू देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय अपने ग्रन्थ में लिखते हैं - ''उस संन्यासी की आयु 34 या 35 वर्ष की होगी। उसके वस्त्र गेरुए थे, कण्ठ (गले) में रुद्राक्ष की माला लहरा रही थी, हाथ में मात्र एक बड़ा सा लोटा अथवा घड़ा था तथा साथ में कुछ पुस्तकें थीं। संन्यासी की आकृति में कुछ विशेषत्व है, उसकी बातचीत और भावभंगिमा में कुछ असाधारणतत्व का परिचय मिलता है। वह कुछ दिन के पश्चात् दण्डी स्वामी विरजानन्द की पाठशाला में आ पहुंचा और उसे यथारीति प्रणिपात् के पश्चात् पढ़ने की इच्छा प्रकट की।'

उपनिषद् में एक कथा आती है, जिसमें विद्या एक विद्वान् ब्राह्मण से कहती है - मुझे किसी अपात्र को मत देना अन्यथा मेरा रूप कालिमामय हो जायेगा। स्वामी विरजानन्द जी अपनी पाठशाला में प्रवेश देते समय छात्र के पात्रापात्र का भलीभांति परीक्षण करते थे। प्रविष्ठ छात्रों से वे न तो कोई शुल्क लेते थे और न समाप्ति पर कोई गुरु दक्षिणा। आजकल तो झंडे को प्रणाम करवाकर दक्षिणा बटोरने में तनिक भी लज्जा नहीं महसूस की जाती है। फिर उस गुरु दक्षिणा का क्या होता है, वे झण्डेधारी ही जाने।

हाँ, तो अपने नियम के अनुसार दण्डी संन्यासी ने उपस्थित संन्यासी की मेधाबुद्धि की परीक्षा करने तथा 2-4 बातें करने के पश्चात् अनुभव कर लिया कि यह संन्यासी विद्यार्थी पूर्ण जिज्ञासु है तथा अनन्य असाधारण मेधावी है। कुछ क्षण रुककर स्वामी विरजानन्द ने कहा - 'अनार्ष ग्रन्थों की बातें एकदम भूल जाओ। यदि इन अनार्ष ग्रन्थों की शिक्षा का अंशमा भी मन में रहेगा तो आर्ष ग्रन्थों की शिक्षा बद्धमूल न हो सकेगी। अतः मनुष्य प्रणीत पुस्तकों के उपदेश को एकदम भूल जाओ और इतना ही नहीं, तुम्हारे पास जो मनुष्य प्रणीत ग्रन्थ हैं, उन्हें इसी यमुना में फेंक आओ।' इस आदेश को सुनकर जब दयानन्द वहां से जाने लगे, तब उस उत्कृष्ट संन्यासी ने इस दयानन्द से एक और भी बड़ी महत्वपूर्ण बात कह डाली। चूंकि तुम संन्यासी हो इससे प्रतीत होता है कि तुम्हारे भोजन और निवास के सम्बन्ध में कोई स्थिरता नहीं हो सकती, इसलिए भोजन और आवास की व्यवस्था स्वयं आपको प्राथमिक रूप से करनी होगी। यह युवा संन्यासी भी कोई कम न था, वह तत्काल उन्हें आश्वासित कर वहां से चला गया। परन्तु ..... विरजानन्द पर अपनी छाप छोड़ गया।

यह निर्विवाद सत्य है कि परमात्मा नामक सत्ता पर दृढ़ आस्था रखने वाले सदैव आशावादी एवं उच्च मनोबल के होते हैं। संन्यासी दयानन्द तो इसके साक्षात अवतार थे। उन दिनों मथुरा में ज्योतिषी बाबा अथवा जोशी बाबा का घर सदाशयता और आतिथ्य के कारण बहुत प्रसिद्ध था। इस समय जोशी परिवार में 'अमरलाल' नामक महाशय विद्यमान थे। कहा जाता है कि उनके पूर्वज गुजरात से चलकर यहां आ गए थे। किसी ईश्वरीय प्रेरणा से ही इस युवा संन्यासी से महाशय अमरलाल का साक्षात्कार हो गया। अमरलाल जी भी औदिच्य ब्राह्मण थे। कुछ सौम्य और कुछ साम्य ने परिस्थिति को अनुकूल बना दिया। ब्राह्मणवृत्ति के कारण इस संन्यासी की ओर आकृष्ट हो गए। उस संन्यासी ने अपना मथुरा आने का मन्तव्य आदि सब कुछ बता दिया। तब पं. अमरलाल जी ने प्रसन्न मुद्रा में अपने ही घर पर नियमित रूप से भोजन का प्रबन्ध कर दिया। फिर भी समस्या आवास की शेष रह गई थी। मथुरा के विश्राम घाट के ऊपर वाले भाग में जो लक्ष्मी नारायण मन्दिर है, उसी के नीचे की मंजिल की कोठरी में इस संन्यासी के रहने की व्यवस्था हुई। देखें विरजानन्द चरित, लेखक स्व. देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय, पृष्ठ 185। इस प्रकार रोटी, कपड़ा और मकान की व्यवस्था के बाद संन्यासी का 'ज्ञान यज्ञ' प्रारम्भ हो गया।

कहते हैं, गुरु विरजानन्द जी कभी-कभी पढ़ाते समय दयानन्द दंडी संन्यासी से तर्क करते हुए बहुमत गहराई तक चले जाया करते थे। दण्डी दयानन्द भी समझने लगे थे कि यह गुरुजी भी असाधारण प्रतिभा के हैं। उन्होंने सर्वप्रथम इन्हें पाणिनी का पाठ पढ़ाना प्रारम्भ किया। वे बिना टीका भाष्यादि की सहायता से ही पढ़ाया करते थे। कहा जाता है कि विरजानन्द की वागिन्द्रय से भी नाना शास्त्रों की नाना व्याख्या अविरल रूप से निकलकर शिष्य मंडली को विस्मित करती थी। दयानन्द यह सब अद्भुत और अदृष्टपूर्ण व्यापार देखकर इस दृष्टिहीन (अंधे) अध्यापक को एक अलौकिक पुरुष स्वीकार करने पर बाध्य हुए और जितने विस्मयादिष्ट हुए उतने ही श्रद्धाभारावनत चित्त होकर उनसे पढ़ने लगे।'

स्वामी विरजानन्द भाष्यों में से महाभाष्य पाणिनीकृत अष्टाध्यायी को सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ स्वीकार करते थे। यही कारण था कि दयानन्द की पाणिनी के साथ महाभाष्य को भी पढ़ाया जाने लगा। पढ़ाते समय कभी गुरु शिष्य में वाग्युद्ध भी हो जाता था। दयानन्द की तर्कपटुता देखकर ही विरजानन्द मन ही मन अति प्रसन्न होते थे। वे कभी दयानन्द को कालजिह्व कुलक्कर कहकर पुकारते थे। स्वामी विरजानन्द के शब्दों में - 'कालजिह्व उसे कहते हैं कि जिसकी जिह्वा असत्य खंडन में काल के समान हो। कुलक्कर उसे कहते हैं जो शास्त्रार्थ के समय खूंटे के समान अविचलित रहकर शत्रुपक्ष को परास्त करें।'

स्व. श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के अनुसार - जैसे पुराकालीय समरशिक्षक या शास्त्राचार्यगण किसी सुनिपुत्र शिष्य को पाकर उसे रणभूमि में दुर्जेय बनाने के लिए ब्रह्मास्त्र के प्रयोग तक की शिक्षा दिया करते थे, इसी प्रकार उपस्थित क्षेत्र में भी जो कुछ सिंचित और संबल विरजानन्द के पास था, वह उस सबकी दयानन्द को शिक्षा देने लगे।

कहा जाता है कि स्वामी विरजानन्द के सानिध्य में दण्डी दयानन्द प्रायः तीन वर्ष ही रहे। कतिपय इतिहासकार इस समय को बढ़ाकर यह कहते हैं कि जब दयानन्द दीक्षा प्राप्त कर वहां से चले तब उनकी आयु 41 वर्ष की थी। दीक्षा के समय दयानन्द के पास कुछ न होने के कारण वे नतमस्तक होकर गुरुजी से बोले - 'मेरे पास कुछ नहीं है, मैं क्या देकर गुरु दक्षिणा का कार्य समाप्त करूँ।' तब विरजानन्द ने वात्सल्यपूर्ण शब्दों में अपने शिष्य से कहा - 'मैं तुमसे एक नए प्रकार की दक्षिणा चाहता हूँ। तुम मेरे सामने प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहोगे, तब तक भारत क्षेत्र में आर्ष ग्रन्थों के प्रचार और वैदिक धर्म के विस्तार में प्राण पर्यन्त भी अर्पण कर दोगे। मैं इस प्रतिज्ञा परिपालन को ही तुमसे दक्षिणा रूप में ग्रहण करूँगा।' इसे सुनकर शिष्य बोला 'तथास्तु।' वहां से विदा होते समय विरजानन्द ने शिष्य के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और विरजानन्द के वयोजीर्ण कंधों से वैदिकधर्म की जय पताका अपने बलिष्ठ कंधों पर लेकर मथुरा से प्रस्थित हो गए।

- पं. मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

अ/13, सुदामानगर, इन्दौर (मध्य प्रदेश)-452009

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

हिन्दी दिवस पर अंग्रेजी का वर्चस्व

— डॉ. रघुवीर वेदालंकार

15 अगस्त को हम पूरे जोश से स्वाधीनता दिवस के रूप में मनाते हैं। मनाना भी चाहिए, किन्तु यह कैसी स्वाधीनता कि हम अपने ही देश के एक भाग कश्मीर में भारत माता की जय का नारा नहीं लगा सकते। जिस क्रूरता के साथ वहाँ के स्थाई निवासी पण्डितों को वहां से खदेड़ा गया, ऐसा तो अंग्रेजी राज्य में भी नहीं हुआ था। अंग्रेजी भाषा तथा संस्कृति ने आज जनमानस को जकड़ लिया है। कहा जाता है कि अंग्रेजी के बिना विज्ञान सम्बन्धी तथा अन्य क्षेत्रों में भारत उन्नति नहीं कर सकता। यद्यपि यह कहना छलावा मात्र है क्योंकि चीन आदि देश अपनी ही भाषा में वैज्ञानिक उन्नति भी कर रहे हैं। तथापि ज्ञान-विज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए अंग्रेजी का विरोध नहीं। इसे विद्यालयें, महाविद्यालयों में बढ़ाया जाए तथा इसके बल पर आधुनिक लाभ लिये जायें, किन्तु अंग्रेजी की आड़ में अपनी राष्ट्रीय भाषा हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की वो उपेक्षा न की जाए। हमारे दैनिक व्यवहार में हमारी प्रांतीय भाषाओं तथा राष्ट्र भाषा हिन्दी का ही वर्चस्व रहे, तभी यह भारत-भारत रह सकेगा, अन्यथा सब कुछ अंग्रेजी तथा अंग्रेजियत के प्रभाव में आ रहा है तथा आ जायेगा।

हमारी मानसिक दासता तो देखिये कि अंग्रेजी के प्रचार पर हम अपनी भाषा को भी बिगाड़ रहे हैं बिल्कुल आंख मीचकर। उदाहरण वही दूर दृष्टि से दिल्ली में विशाल क्षेत्र को आवासीय बनाकर उसका नाम 'रोहिणी' रखा गया। अंग्रेजी में इसका अनुवाद Rohini ही बनेगा। क्योंकि 'ण' है ही नहीं। इसी Rohini का पुनः हिन्दी में अनुवाद 'रोहिनि' किया गया जो आज दिल्ली की बसों आदि में देखने को मिल जाता है। भारतीय शब्द योग को योगा बनाकर पुनः इसे हिन्दी में भी योगा लिखा तथा बोला जाने लगा। कैसी मानसिक गुलामी है हमारी कि हम शब्दों की शुद्धता पर भी ध्यान नहीं देते। इसी प्रकार मुम्बई को Bombay कहना भी ऐसा ही है।

राम को Rama रामा तथा कृष्ण को Krishnana कृष्णा बना डाला। एक दिन मेरे प्रधानाचार्य ने सभा में मेरा नाम अंग्रेजी लहजे में रघुवीरा कह दिया। मैंने तुरन्त प्रतिवाद किया कि मैं पुरुष हूँ। रघुवीरा तो स्त्रीलिंग है। प्रधानाचार्य नाराज हो गये। अब नहीं अंग्रेजी काल से ही हम इस दासता को बिना विचारे ही ढोते चले आ रहे हैं। दिल्ली या देहली को सब जानते हैं कि इसका यही नाम था किन्तु अंग्रेज इसका शुद्ध आचरण करने में असमर्थ थे। अतः वे Delhi ही कहते थे। हमने भी उसे ही अपना लिया। अन्यथा देहली की स्पेलिंग तो Dehli ही होगी, दिल्ली की Delhi होगी। प्रयाग राज का नाम मुसलमानों ने बदलकर इलाहाबाद कर दिया किन्तु अंग्रेज सुगमता से अंग्रेजी में इसका उच्चारण नहीं कर सकते थे। अतः उन्होंने इसे Allahabad अल्लाहाबाद बना डाला, अन्यथा शुद्ध अनुवाद तो Elahabad था। हम आज भी इन दोनों शहरों तथा इनके समान कुछ अन्यों की भी भ्रष्ट स्पेलिंग लिखते चले आ रहे हैं। क्या कारण है?बौद्धिक दरिद्रता। अंग्रेजी के अनुसार पत्रों में Dear कहकर सम्बोधित किया जाता है। हिन्दी में भी इसका अनुवाद 'प्रिय' हमने ग्रहण कर लिया तथा राजकीय भाषा में प्रायः इसी का प्रयोग किया जाता है। यदि पत्र लिखने वाला अपने से बड़े को पत्र लिख रहा हो या कोई महिला किसी पुरुष को पत्र लिख रही हो। बड़ा ही अजीब लगता है यह, जबकि हमारी भाषा दरिद्र तो नहीं है। यहां पर छोटे के लिए तथा महिला अपने पति के लिए ही प्रिय का सम्बोधन करती है, अन्यथा आदरणीय, श्रीमान महोदय आदि सार्थक शब्द हमारे यहां सम्बोधन के लिए हैं। यह तो लिखने-पढ़ने की बात रही। सामान्य बोलचाल की भाषा में भी अंग्रेजी इतनी हावी हो गई है कि हम अपनी भाषा के शब्दों की उसी प्रकार देने लगे हैं, जैसे मृत कलि को उसके परिवार वाले। यह स्थिति भयावह है।

उदाहरणार्थ प्रातः नाश्ते के स्थान पर ब्रेक फास्ट, भोजन को लंच तथा डिनर, शौचालय को लेटरीन, स्नानागार को बाथरूम, भुगतान को पेमेंट, पत्र को लेटर, उद्यान को पार्क, डाकघर को पोस्ट ऑफिस, कार्यालय को ऑफिस, विश्विविद्यालय को यूनिवर्सिटी, प्रधानाचार्य को प्रिंसिपल, नौकर को सर्वेंट, चपरासी को पियोन, अध्यापक को मास्टर आदि कहने में ही गौरव समझते हैं। हिन्दी शब्दों के उपयोग में हीनता अनुभव करते हैं इसी प्रकार के अन्य भी अनेक अंग्रेजी शब्द ऐसे हैं जिन्हें बोलकर हम अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की जड़ें काट रहे हैं। भाषा ही नहीं, भाषा की तरह अंग्रेजी क्रियाकलाप भी हमारी दिनचर्या का अनिवार्य अंग बनते जा रहे हैं। जन्मदिवस पर हवन न करके केक काटना तथा 'हैप्पी बर्थडे टू यू' की ध्वनि करना, हमारी आदत बन गई है। 'जन्मदिन की शुभकामनाएँ कहने में हमें हीनता दिखलाई देती है। यह भाषा कैसी दरिद्र है, थोड़ा सा दृष्टिपात कीजिए। दिल्ली में एक कॉलोनी है 'गुरु तेग बहादुर नगर'। अति गौरवपूर्ण नाम है जिसमें हमारे गुरु जी का नाम जुड़ा है किन्तु अंग्रेजी में इसे जी. टी. बी. नगर बना दिया गया। गुरु जी लुप्त हो गये। हिन्दी में इसका संक्षिप्तीकरण गु. तेग. बहा. नगर होता तो गुरु जी तो स्मरण रहते। इसी प्रकार मध्य प्रदेश के तांत्या नगर को टी. टी. नगर बना दिया गया जैसे कि वहां पर रेलवे के टी. टी. ही रहते हों। हिन्दी में इसे ता. टोपे नगर लिखा जाता तो इतिहास पुरुष की स्मृति भी हमें रहती। सरकार तो ऐसा कर ही रही है, रोकना तो उसे भी चाहिए किन्तु हमें अपने व्यवहार में वो अंग्रेजी शब्दों को विच्छु के समान दूर रखकर यथाशक्ति राष्ट्रभाषा हिन्दी के या क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। अपने पत्र तथा निमंत्रण पत्र भी हिन्दी या क्षेत्रीय भाषाओं में भेजने चाहिए।

-बी.-266, सरस्वती विहार,
दिल्ली-34, 'टंकारा समाचार से साभार'

आर्य समाज कौंकेरा के संरक्षक स्वामी धर्मानन्द जी का निधन

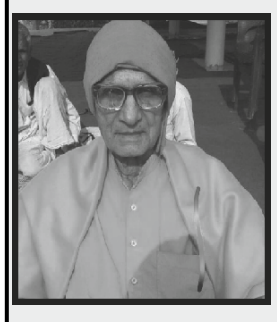

आर्य समाज कौंकेरा के संरक्षक एवं वैदिक विरक्त मण्डल के सदस्य आर्य समाज के लिए सर्वात्मना समर्पित स्वामी धर्मानन्द जी का 6 सितम्बर, 2018 को प्रातः 3 बजे एक दुर्घटना में निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार 6 सितम्बर, 2018 को ही पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

सार्वदेशिक सभा के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्य उनके आकस्मिक निधन से अत्यन्त दुःखी हैं तथा उनकी आत्मा की सद्गति तथा पारिवारिक जनों को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

— सम्पादक

हिन्दी के हित आग चाहिए

— डॉ. कृष्ण लाल

युवकों के उर की धड़कन में आज धधकती आग चाहिए।
करके दृढ़ संकल्प उसी की पूर्ति हेतु फिर त्याग चाहिए।
तुमने करके सत्य-प्रतिज्ञा अंग्रेजों को दूर भगाया।
अब अंग्रेजी की बारी है फिर क्यों उसको गले लगाया?
उन्नत राष्ट्र, स्वभाषा उन्नत, किन्तु पराई भाषा ले ले।
चला रहे इस लोकतंत्र को, फिर वह कैसे गाड़ी ठेले?
आगे बढ़ युवकों! दृढ़ता से अपना लो तुम अपनी भाषा।
यह जन-जन की मुखरित आशा पूरी हो सबकी अभिलाषा।।
ले पावन संकल्प हृदय में चट्टानों से टकरा जाओ।
मार्ग तुम्हारा रोक रहा जो उसे गिराओ, मत घबराओ।।
जिसका पहला अक्षर बोले, जिसमें माँ से प्यार मांगते।
जिसमें रोए, गाए, खेले, उससे ही क्यों दूर भागते?
उद्योगों में कार्यालय की कुर्सी पा भूले निज भाषा।
संसद में भी हो कृतघ्न जो भग्न कर रहे जन-मन-आशा।।
युवकों! तमसे ही आशा है, क्रांति एक ऐसी ले आओ।
ले यौवन की आग धधकती उनके लोह-हृदय पिघलाओ।।
जन भाषा हो शासन की भी अब वो गिट-पिट नहीं सहो रे।
आजादी के मुंह से इंग्लिश का कलंक अब तो दूर करो रे।।
इंग्लिश रखने हेतु बहाने झूठ और दलीले थोथी।
नहीं सुनो, ला दो निज भाषा, कमी एक ही निश्चय की है।।
तुम चाहो पर्वत हिल जाए, तुम चाहो यह धरती कांपे।
तुम चाहो अम्बर गिर जाए, चरण तुम्हारे सागर नापे।।
सोया ज्वालामुखी जगा दो, बाधाओं की चिन्ता छोड़ो।
मन में दृढ़ संकल्प संजोकर जन-जन को आपस में जोड़ो।।
निज भाषा का स्रोत हृदय है और वही आधार जनों का।
निज भाषा ही साधन है जो करवाता है मेल मनों का।।
भूत भगाने को इंग्लिश का जन भाषा में काम करो सब।
बनो हिन्द के प्रेमी मन से हिन्दी में ही काम करो अब।।
छोड़ो अंग्रेजी हस्ताक्षर, बोली अंग्रेजी भी छोड़ो।
अंग्रेजी की छोड़ दासता निज भाषा में नाता जोड़ो।।
वीर! तुम्हारे उर की धड़कन में कुछ ऐसी आग चाहिए।
ऐसा दृढ़ संकल्प चाहिए फिर ऐसा ही त्याग चाहिए।

— आचार्य, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

ओ३म्

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यं । भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

अस्मिन यज्ञे विश्रयन्तामृतावृधः (सत्य के प्रचारक, सत्य की रक्षा करने वाले देव इस यज्ञ में उपस्थित हों।)

प्रियं देवानामप्येतु पाथः– यज्ञकर्ताओं को देवों का प्रिय स्थान प्राप्त हों।

दयानन्द मठ चम्बा का 38वाँ वार्षिकोत्सव एवं 18वें दुर्लभ शारद यज्ञ की पूर्व सूचना

मेरे प्रिय आत्मीयजनो व धर्मधुरी, धर्मप्रेमी सज्जनों, आज समाज में, राष्ट्र में, राष्ट्र में ही क्या, समस्त संसार में जो उथल-पुथल हो रही है, प्राकृतिक आपदाएं आ रही हैं, अतिवृष्टि व अनावृष्टि के कारण जो भयंकर तबाही हो रही है,उससे चारो ओर भय का वातावरण बन रहा है। विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ मनुष्य को, समाज को जकड़ती जा रही हैं। हवा दूषित, पानी दूषित, मन दूषित, विचार दूषित, खान-पान दूषित, चारों ओर सारा का सारा वातावरण ही दूषित दर दूषित होता जा रहा है। लूटपाट, चोरी, डकैती, मारकाट, बलात्कार, व्यभिचार, अत्याचार, तथा विभिन्न प्रकार के दुर्घटनाओं के कारण जनित-चीत्कार हाहाकार, की वीभत्स ध्वनियों के कारण उत्पन्न ध्वनि प्रदूषण से द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक, पृथ्वी लोक, व्याप्त होते जा रहे हैं, जिसके कारण अशान्ति, बेचैनी, भय व आशंकाओं में आम आदमी जीने को मजबूर है। न रात को नींद है, न दिन को चैन है। अधिक क्या लिखूं आप सभी इन सब बातों के प्रत्यक्षभोक्ता व प्रत्यक्षद्रष्टा हो। सभी लोग इन समस्याओं से छुटकारा पाना चाहते हैं पर इसका उपाय क्या है? शास्त्रों के अनुसार इन सबसे छुटकारा पाने का एक ही उपाय है और वह है यज्ञ। यज्ञ ही वह एक उपाय है, यज्ञ ही वह कर्म है, जिसके सम्पादन से सभी समस्याओं से छुटकारा पाया जा सकता है। नान्य पन्थाःविद्यतेऽनाय इसके अलावा इनसे छुटकारा पाने का न कोई उपाय है न कोई उपचार।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः यज्ञ के अलावा सभी कर्म बन्धनों में डालने वाले हैं। इसलिए हे बन्धुजनों तदर्थं मुक्तसंगसमाचरथ आओ अन्य कर्मों में आसक्ति को छोड़ इस यज्ञ कर्म को अपनाकर समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, अपनों तथा अपने प्रति हमारा जो कर्तव्य बनता है, उसे निभाते हुए, पाप, ताप, संतापों, से छुटकारा पाकर अग्निदेव से प्रार्थना करें। यज्ञ में उपस्थित सभी देवों से प्रार्थना करें यत्रब्रह्मविदो यान्ति दीक्षया तपसासह दीक्षा व तप के साथ जहां जिस लोक में ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मवेता ऋषि, महर्षि लोग जाते हैं। हे अग्नि देव, हे वायु देव, हे सूर्य देव, हे चन्द्रदेव, हे सोमदेव, हे इन्द्रदेव, हे जलदेव, हे यज्ञ में उपस्थित समस्त देवों, हे ब्रह्म देव हमें भी उन लोकों को प्राप्त कराओं। बन्धुजनों यज्ञों का वह प्रकार, यज्ञों की वह विधा पूज्य चरणों ने वेदों से लेकर हमारे सामने उपस्थित कर दी हैं। जिन में से यह दुर्लभ शारद यज्ञ भी एक है। जो व्यय साध्य है, कष्ट साध्य हैं परन्तु सर्वविध कल्याणकारी हैं। इस यज्ञ को तन, मन, धन, सब प्रकार से सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए एक बार पुनः आप लोगों से आवेदन, निवेदन करने के लिए उपस्थित हुआ हूँ। इसकी पूर्व सूचना आप लोगों को दे रहा हूँ ताकि आप लोग इसके लिए पहले से ही सजग व तैयार रहें। इसमें कौन भजनीक आ रहें हैं?, कौन विद्वान, सन्यासी व उपदेशक आ रहें हैं?, इस जिज्ञासा से परे हटकर केवल व केवल यज्ञ की ही जिज्ञासा, यज्ञ की ही पिपासा लेकर आप लोग आने का मन बनाएं। विशेष आमन्त्रित विद्वान, सन्यासी व भजनीक इनमें कोई नहीं हैं। आमन्त्रित करने पर न आए, नाम छपने पर भी दगा दे जाए जो मिथ्यावादिता के दोष से हमारा यज्ञ पहले ही दूषित हो जाएगा। इसलिए सूचना दे रहें हैं यह सूचना सभी के लिए हैं। विद्वानों, सन्यासियों, उपदेशकों, महोपदेशकों सभी के लिए है। इनमें से जो भी आ जाऐंगें यज्ञ में उन सबका स्वागत हैं। यथा सामर्थ्य मार्ग व्यय आदि से उन्हें सम्मानित भी करेंगें। पूज्य स्वामी आर्यवेश जी, पूज्य स्वामी सवितानन्द जी इस यज्ञ के मुखिया हैं ही। संस्था के संरक्षक भी हैं। इन्हीं महामनीषियों, त्यागी, तपस्वी, सन्तों के

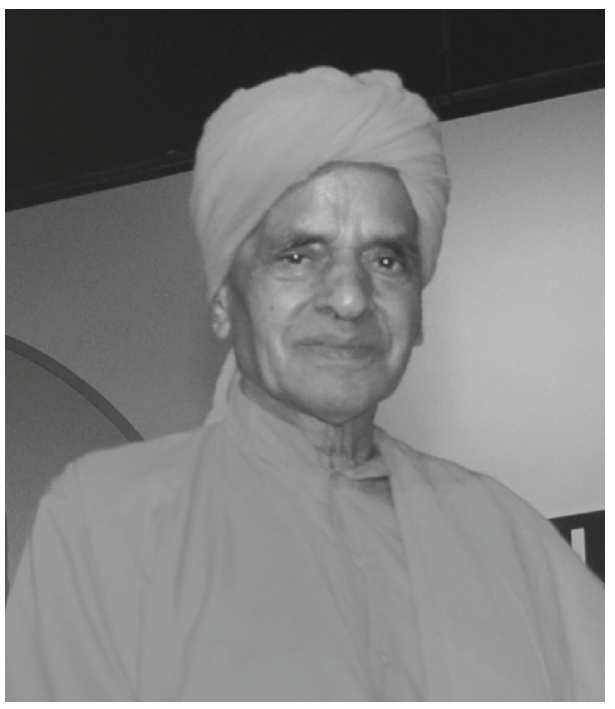

दिशा-निर्देश में, इनसे प्राप्त आशीर्वाद से हमारे सब कार्य चल रहे हैं व उनके द्वारा दी गई शाबासी से उत्साहित हो, मैं आगे बढ़ पा रहा हूं, और इन सब कार्यो को करने में सक्षम हो पा रहा हूँ। पूज्य चरणों की, दिव्यजनों व दिव्यात्माओं की छत्रछाया तो हरदम हम पर बनी हुई है। आप सभी का सहयोग भी हरदम बना रहता है। बस हम सबने यज्ञ का ही माहौल, यज्ञ का ही वातावरण बनाना है। भजनीक के रूप में श्री संदीप आर्य जी, मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सरस्वती देवी, विद्यालय की संगीत विषय की अध्यापिका एवं छात्राएं, प्रिय बेटे रमेश की पत्नी नीतू व हेमराज आदि लोग हैं। ये सभी बीच-बीच में संगीत की स्वर लहरियों से भी यज्ञ के वातावरण को मोहक व आह्लादकारी बनाऐंगें। विद्वानों व सन्यासियों के द्वारा वेद विषय को तथा यज्ञ विषय को भी सरल, सोमरस बना पिलाया जाएगा। आप सभी कुछ समय के लिए अपने शेष कार्यो को, दुनियादारी के झमेलों को छोड़ कर इस अलौकिक वातावरण में प्रवेश कर स्वर्गीय आनन्द का उपभोग करने के लिए अवश्य आएं। आओगे तो आगे भी इच्छा बनेगी, और चाह बढ़ेगी, कवि के शब्दों में अमृत झरना झरता हैं इसे पीके अमर हो जाओ रे-किमधिकम्

कार्यक्रम

7 अक्टूबर से 9 अक्टूबर 2018 तक मठ का वार्षिक उत्सव मनाया जाएगा, जिसमें प्रातः 6 बजे से 10 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन होंगें। क्योंकि चम्बा में गुरुकुल बन्द हो गया है। लोगों के मन में यह धारणा घर कर गई है और इसका प्रचार भी जोरों से हुआ। उसे दूर करने के लिए गुरुकुलों में जो गतिविधियां होती हैं, जो संस्कार दिए जाते हैं, उनकी झाकियां गुरुकुल में निवास करने वाले छात्रों द्वारा एवं महर्षि दयानन्द आदर्श विद्यालय के छात्रों-छात्राओं द्वारा, 11 बजे से 3.30 बजे तक प्रस्तुत की जाएंगी।

सायं-- 4 से 7 बजे तक पुनः यज्ञ व भजन प्रवचन

यह क्रम 9 अक्टूबर 2018 तक चलेगा।

दुर्लभ शारद यज्ञ

10 अक्टूबर 2018 को प्रातः 6.30 बजे से देवों पितरों के साथ-साथ, आप सभी दिव्यात्माओं के साथ मिल बैठकर-परमपिता परमात्मा का आशीर्वाद ले, पूज्य चरणों की छाया में दुर्लभ शारद यज्ञ आरम्भ हो जाएगा, जो कि पूरे दिन व पूरी रात निरन्तर चलेगा। अहः अक्तुं यज्ञम् ऋग्वेद का आदेश है, और 11 अक्तूबर प्रातः 10 बजे इसकी पूर्णाहुति होगी, मैंने- समय सारणीपूर्वक पूर्व सूचना देकर अपना फर्ज, अपना कर्तव्य निभा दिया है, आगे भी निभाऊंगा। अब आप लोगों की बारी है। अतः अभी से तैयारियां शुरु कर दें। इस सौभाग्यशाली अवसर पर यदि कोई यज्ञमान बनना चाहता हो तो पूर्व सूचना दे दें। अन्न, धन, मन व तन से अधिकाधिक रुप से इस महायज्ञ में सहयोग दे कर पुण्यार्जन करें। भगवान कृष्ण कहते हैं- यज्ञदान, तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेवतत् यज्ञ करना, तप करना और दान देना इन तीन कर्मो को मनुष्य को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। इन्हें निरन्तर करते रहना चाहिए क्योंकि यह तीनों कर्म मनीषियों को भवसागर से पार कराने वाले पवित्र कर्म हैं। पावमानि मनीषिणाम् ऋग्वेद के सातवें मण्डल के छियासठवें सूक्त के ग्यारहवें मंत्र में निर्दिष्ट इस दुर्लभ शारद यज्ञ में यह तीनों ही कर्म एक साथ सम्पन्न हो जाते हैं। यह कष्ट साध्य है, इसे सम्पन्न करने के लिए तप, करना पड़ता है। यह प्रचुर दान से सिद्ध होता है। इस यज्ञ के लिए दिया गया दान ददाति परमम् सौरव्यम् इहलोके परत्र च इहलोक में भी तथा यहां से जाने के बाद परलोक में भी अपार सुखों को देता है क्योंकि यह दान- पात्रे विधिवत् प्रति पादितम्- योग्य स्थान पर सर्वहित कार्य के लिए दिया गया है। इसलिए इस अवसर का लाभ उठाएं। ईश्वर सबका कल्याण करे। सुविधाओं के लिए- यदि आप लोगों में से किसी के मन में दान देने की अभिलाषा उपजती हो तो उसकी सुविधा के लिए मठ खाता न0 नीचे दे रहा हूँ। मठ को दिया गया दान ए. टी. जी. के दायरे में आता है।

दयानन्द मठ चम्बा

भारतीय स्टेट बैंक चम्बा

खाता न. -11149833806

IFSC NO-SBIN0000626,

CIF NO-80932484893

खाते में राशि जमा करने के बाद- 098050-22871 अथवा 01899-222871 इन नम्बरों में से किसी एक पर सूचना अवश्य दे दें ताकि रसीद भेजने में आसानी रहेगी।

- सूचक व निवेदक

आचार्य महावीर सिंह, अध्यक्ष, दयानन्द मठ चम्बा

हि. प्र.-176310, मो.:-9736396575

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल, नई बस्ती, रामापुरा वाराणसी में श्रावणी पर्व सोल्लास मनाया गया

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल, नई बस्ती, रामापुरा वाराणसी में श्रावणी–उपाकर्म, ऋषि तर्पण, वेद स्वाध्याय पर्व, रक्षा बन्धन एवं विश्व संस्कृत दिवस संयुक्त रुप से मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय की विदुषी प्राचार्या/मुख्यधिष्ठाती आचार्या डॉ. गायत्री आर्या ने सभा को सम्बोधित करते हुए बताया कि श्रावणी का अर्थ है सुनाये जाने वाली। जिसमें वेदों की वाणी को सुना जाये। जिसमें निरन्तर वेदों का श्रवण–श्रावण और स्वाध्याय एवं प्रवचन होता रहे। उपाकर्म का अर्थ है जिसमें ईश्वर और वेद के समीप ले जाने वाले यज्ञ कर्मादि श्रेष्ठ कार्य किये जाएँ। इसी प्रकार ऋषि मुनियों के वचनों को सुनकर उनका सम्मान करना ही ऋषि–तर्पण कहलाता है। वानप्रस्थी के लिए आदेश है कि वह नित्य स्वाध्याय में युक्त रहे। इसी प्रकार संन्यासी सब कुछ छोड़ दे किन्तु वेद का स्वाध्याय न छोड़े। श्रावण मास में ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थी, संन्यासी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र सब के सब वेद पढ़ें और पढ़ाएँ। उन्होंने श्रोताओं के उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु, ऐश्वर्य, यश–कीर्ति की परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की। कन्याओं ने सभी उपस्थित भाइयों को राखी बाँधकर अपनी सुरक्षा की कामना की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अजीत कुमार आर्य प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा वाराणसी रहे तथा कार्यक्रम का संचालन श्री राजेश राय ने किया। कार्यक्रम अत्यन्त सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज हिरण मगरी उदयपुर में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन 20 से 26 अगस्त तक किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिनाम वैदिक विद्वान आचार्य डॉ. सोम देव जी शास्त्री (मुंबई) के ब्रह्मत्व में प्रातः एवं सांय दोनों समय विशेष यज्ञ किया गया। यज्ञोपरांत आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पण्डित केशव देव शर्मा (सुमेरपुर) ने हृदयग्राही भजन प्रस्तुतियां दीं। आचार्य जी ने संध्या एवं ईश्वर–स्तुति–प्रार्थना उपासना के गूढ़ रहस्यों को खोलकर व्याख्यान दिए। 23 अगस्त सायंकालीन सत्र में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विश्लेषक एवं कलम के धनी डॉ. वेदप्रताप जी वैदिक ने धर्मसभा को उद्‌बोधित करते हुए प्रेरित किया कि व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के सही विकास हेतु हमें बालकों, किशोरों और युवाओं को आर्यसमाज से जोड़कर संस्कारित करना होगा। प्रतिदिन सुबह–शाम उपस्थित सभी महानुभावों को पाखण्ड खण्डन आदि विभिन्न विषयों पर लघु प्रपत्र वितरित किये गए। इस अवसर पर आधे मूल्य पर वैदिक साहित्य का विक्रय किया गया।

– श्रीमती ललिता मेहरा, प्रधान,

मो. 9785267789

दलित कौन ?

– टंकाराश्री अरुणा सतीजा

आज जातिवाद के नाम पर सारा देश अशान्त है। देश में चारों ओर हाहाकार मच रहा है। हैवानियत का ताण्डव नाच हो रहा है। आगजनी की घटनाएँ तो साधारण सी बात है जबकि ऐसी घटनाओं में अरबों–खरबों रुपये की चल व अचल सम्पत्ति जलकर राख हो जाती है। अहित व हानि किसकी होती है? देश की/राष्ट्र की व समाज की। वैसे समझा जाए तो अप्रत्यक्ष रूप से हानि होती है हमारी–तुम्हारी व हम सबकी। सबसे अधिक शर्मनाक व दुःखद बात तो यह है कि विश्व में देश की साख गिरती है, देश कमजोर होता है क्योंकि देशवासी निजी स्वार्थ के लिए परस्पर लड़ रहे हैं। उनके हृदयों में एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या–द्वेष व घृणा की आग जल रही है। ऐसी छोटी–छोटी चिंगारियाँ कभी भी विनाशकारी हो सकती है। इसके दूरगामी परिणाम कितने भयंकर होंगे, कल्पना नहीं कर सकते।

आओ इतिहास के कुछ पन्नों को उलट कर देखें। जातिवाद कोई समस्या नहीं है परन्तु सदा समस्या रही है। जब तक लोगों का जनजीवन वेदानुकूल रहा तब तक वर्ण व्यवस्था राष्ट्र व समाज के लिए कल्याणकारी रही क्योंकि इसका आधार कर्म था जन्म नहीं। कोई भी व्यक्ति किसी कुल व जाति में उत्पन्न क्यों न हुआ हो पर वह योग्यता के आधार पर चारों में से किसी भी वर्ण को चुन सकता है। वैदिक काल में कई ऋषि निम्न कुल में जन्मे थे जैसे जाबाल ऋषि चण्डाल कुल से, विश्वामित्र क्षत्रिय कुल से, मातण्ड ऋषि चाण्डाल से ब्राह्मण हो गये।

मध्यकाल में वेदों की शिक्षा पूर्णतया विलुप्त हो गई। वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म न होकर जन्म हो गया। जब पूरा समाज चार वर्णों में बंटा हुआ था तो उनमें से तीन सर्वण और एक अवर्ण क्यों?

समाज में विषमता की दीवार खड़ी हो गई। झूठे धर्म के नाम पर ऊँच–नीच की भावना पनपने लगी। एक दूसरे द्वारा बनी रोटी खाने तथा मात्र एक दूसरे से छू जाने मात्र से धर्म नष्ट हो गया। ब्राह्मणों ने मात्र अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए समाज में ऐसा विष फैला रखा था। धीरे–धीरे छुआछूत तथा परस्पर घृणा की भावना पनपने लगी। चौथे वर्ण के लोग दलित, अछूत व दरिद्र जैसे तुच्छ नामों से पुकारे जाते थे। यही भेदभाव भविष्य में पराधीनता के मुख्य कारणों में से एक था। विदेशियों ने सामाजिक विषमता का भरपूर लाभ उठाया। इन लोगों की स्थिति बद से बदतर होती गई।

दलित का सही अर्थ है शोषित। बहुत गर्व की बात है अगर एक दलित का बेटा कलक्टर बनता है परन्तु उस कलेक्टर का बेटा कहता है कि मैं भी दलित। बेटे की बेटी कहती है कि मैं भी दलित। इसी प्रकार सम्पन्न से सम्पन्न व्यक्ति के बच्चे कहते हैं हम दलित। कैसी विडम्बना है एक सम्पन्न, शिक्षित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति का परिवार कैसे दलित हो सकता है। देश के कर्णधारों देशवासियों को जवाब दो दलित कौन है? आरक्षण की लूट मची है। अधिकांश सम्पन्न जातियाँ भी येन–केन प्रकारेण से आरक्षित होना चाहती हैं। आरक्षण न होकर बाबा जी का लंगर हो गया। आरक्षण के नाम पर राष्ट्र को खण्डित व कमजोर करने वालों अपनी भावी पीढ़ी पर दया करो। वह निर्बल नहीं सबल है। उन्हें आलसी, मन्दबुद्धि तथा अपंग मत बनाओ। वैसाखियों के सहारे चलने वाला व्यक्ति चार कदम भी मुश्किल से चल पाता है फिर गिर जाता है। भावी पीढ़ी तुम्हें कभी माफ नहीं करेगी। घृणित शब्द से याद किए जाओगे।

19वीं शताब्दी में इन दलितों की दशा सुधारने के लिए सन्त महात्माओं तथा सुधारकों ने भरसक प्रयास किये। इनमें से मुख्य थे महर्षि दयानन्द सरस्वती। जो दिन–रात इनके दुःखों को दूर करने में लगे रहते थे। महर्षि का मुख्य लक्ष्य था इन दलितों एवं पीड़ितों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना। इनके पक्ष में अनेकों तर्क दिए, वाद–विवाद हुए ताकि लोग इस वर्ण के लोगों की महत्ता को समझ सकें। जैसे उनका कहना था जिस प्रकार पैरों के बिना मनुष्य का, शरीर अपंग हो जाता है उसी प्रकार इन सेवकों के बिना समाज व देश का विकास असम्भव है। चारों वर्ण एक दूसरे के पूरक हैं। सभी आर्य हैं, मानव हैं भाई–भाई हैं। इन सेवकों के बिना समाज व राष्ट्र का विकास असंभव है।

वेद मानवों को पारस्परिक घृणा से दूर रहने का उपदेश देता है – नीचे गिरे हुए पाप तथा अपराध करने वाले पतित व्यक्तियों को बार–बार ऊपर उठाने का प्रयास करते हुए उनकी दूषित आत्मा को पवित्र करो।

महर्षि देव दयानन्द ने लोगों को वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। उन्होंने जातिवाद के सही स्वरूप का वर्णन अपने महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में किया ताकि लोग सच को जान सकें। उन्होंने लिखा –

'वर्ण' व्यवस्था गुण–कर्म–स्वभाव के अनुसार होती है न कि जन्म से। शूद्र कुल में उत्पन्न होकर कोई भी व्यक्ति क्षत्रिय, वैश्य और ब्राह्मण हो सकता है। रज–वीर्य के संयोग से कोई भी ब्राह्मण शरीर नहीं बनता, मात्र मानव शरीर का निर्माण होता है। उत्तम गुण–कर्म–स्वभाव वाला व्यक्ति चाहे चारों वर्णों में से किसी में भी जन्मा हो वह ब्राह्मण होता है। इसके विपरीत जो मूर्ख है वह शूद्र है चाहे उसका जन्म किसी भी वर्ण में क्यों न हुआ हो? परन्तु सबके साथ व्यवहार एक जैसा करना चाहिए। चारों वर्णों के सहयोग के बिना समाज अधूरा है, अपंग है।'

समाज के लोगों की आँखें खुलीं धीरे–धीरे परिवर्तन आने लगा। आज बच्चों में परस्पर कोई भेदभाव नहीं है। देश आजाद हुआ। संविधान निर्माताओं ने उनके दुःख दर्द को समझा। आरक्षण के नाम से इन्हें विशेष सुविधाओं तथा अधिकारों से दस वर्षों के लिए नवाजा गया। संविधान निर्माताओं ने दिल से काम लिया दिमाग से नहीं। इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को भूल गए कि वह ऐसा करके पुनः वर्ग विभाजन की ऐतिहासिक भूल को दोहरा रहे हैं। जिसके दूरगामी प्रभाव कितने भयंकर हो सकते हैं जो आज हमारे सामने आ रहे हैं।

सभी राजनैतिक दलों को अपनी–अपनी सफलता के लिए मानो, आरक्षण रूपी जादू की छड़ी मिल गई हो। इसका उन्होंने वोटों के रूप में भरपूर लाभ उठाया। पिछड़े वर्गों में से कुछ चतुर लोगों ने ही इसका पूरा लाभ उठाया। वास्तव में दलितों की स्थिति वैसी की वैसी बनी हुई है। सच तो यह है कि दलित बच्चों को आरक्षण की नहीं संरक्षण की आवश्यकता है। उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करो, इनको प्रगति के साधन व सुविधाएँ दो। समाज में मान सम्मान व समानता का व्यवहार हो। इन्हें शिक्षा व आर्थिक सुविधाएँ दो। उनकी उन्नति के सारे दरवाजे खोल दो। अयोग्यता को प्रोत्साहन देकर उन्हें अपंग मत बनाओ। उन्हें होनहार बनाओ परन्तु देश के होनहारों की प्रतिभा, योग्यता व क्षमता को कुण्ठित मत होने दो। अन्यथा समाज पुनः बटेगा, बिखरेगा समस्याएँ बढ़ जायेंगी तथा देश का विकास रूक जायेगा। आज देश में सबको उन्नति के अवसर व अधिकार प्राप्त हैं। देश के प्रत्येक होनहार प्रतिभावान बच्चे को उसे अपने पंखों के दम पर आकाश में ऊँचाइयों को छू लेने दो।

आज प्रतिभा रो रही है, दम तोड़ रही है। दैनिक भास्कर की रिपोर्ट के आधार पर छह प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले बच्चों का आई.आई.टी. में प्रवेश हो जाता है आर्थिक सहायता अलग से मिलती है परन्तु 98/99 प्रतिशत की योग्यता रखने वाला बच्चा खड़ा–खड़ा देख रहा है। कितनी हृदय विदारक पीड़ा है। वह समाज से, राष्ट्र से आरक्षण के नाम पर रक्तपात करने वालों से जवाब माँग रहा है। दलित कौन? मैं या छह प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाला एस.सी. दलित का सही अर्थ है शोषित। बहुत गर्व की बात है अगर एक दलित का बेटा कलक्टर बनता है परन्तु उस कलेक्टर का बेटा कहता है कि मैं भी दलित। बेटे की बेटी कहती है कि मैं भी दलित। इसी प्रकार सम्पन्न से सम्पन्न व्यक्ति के बच्चे कहते हैं हम दलित। कैसी विडम्बना है एक सम्पन्न, शिक्षित तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति का परिवार कैसे दलित हो सकता है। देश के कर्णधारों देशवासियों को जवाब दो दलित कौन है?

आरक्षण की लूट मची है। अधिकांश सम्पन्न जातियाँ भी येन–केन प्रकारेण से आरक्षित होना चाहती हैं। आरक्षण न होकर बाबा जी का लंगर हो गया। आरक्षण के नाम पर राष्ट्र को खण्डित व कमजोर करने वालों अपनी भावी पीढ़ी पर दया करो। वह निर्बल नहीं सबल है। उन्हें आलसी, मन्दबुद्धि तथा अपंग मत बनाओ। वैसाखियों के सहारे चलने वाला व्यक्ति चार कदम भी मुश्किल से चल पाता है। फिर गिर जाता है। भावी पीढ़ी तुम्हें कभी माफ नहीं करेगी। घृणित शब्द से याद किए जाओगे। यदि स्वयं के बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहते हो तो ऐसे अभिभावक बनो जैसे एक स्कूल में एक बच्चे के पिता जी प्राधानाध्यापक जी के पास आये और पूछा जब मेरा बच्चा सफल होने की योग्यता ही नहीं रखता तो आपने उसे कैसे पास कर दिया। ऐसे माँ–बाप के बच्चों का भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल होता है।

अब अति हो चुकी है पानी सिर से ऊपर जा रहा है। समय की माँग है भारत की कल्याणकारी वैदिक व्यवस्था जो अभी तक मरण व्यवस्था बन चुकी है, इसे पुनः जीवित करने की तथा जन–जागृति की अति आवश्यकता है। इस अभेद्य दीवार को गिराना किसी सरकार के लिए संभव नहीं है क्योंकि राजनैतिक दल एक दूसरे के विरोधी हैं। यदि समय पर नहीं चेते तो राष्ट्र एक बार पुनः खण्डित हो जायेगा। फिर किससे पूछोगे दलित कौन जवाब दो?

जो हो गया उसे सोचा नहीं करते,
जो मिल गया उसे खोया नहीं करते,
हासिल होती है उन्हें सफलता जो,
वक्त और हालात पर रोया नहीं करते।

– फ्लैट नं.–101, बी–9, ध्रुव मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राज.), मो.:–9460183872

निमन्त्रण–पत्र

।।ओ३म्।।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
उदयपुर

के तत्वावधान में

२१ वाँ सत्यार्थप्रकाश महोत्सव

दिनांक ६ अक्टूबर से ८ अक्टूबर २०१८

आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी, वानप्रस्थ, उपदेशकों, उपदेशिकाओं, भजनोपदेशकों, भजनोपदेशिकाओं के उद्बोधन–श्रवण का अनुपम लाभ।

कृपया ध्यान दें–

१. उदयपुर रमणीक स्थल है। अतएव यह सत्संग लाभ के अतिरिक्त पर्यटन लाभ का भी अभूतपूर्व अवसर है।
२. अक्टूबर में रात्रि में हलकी सर्दी हो सकती है अतः कृपया ओढ़ने के लिए चादर आदि साथ में लावें।
३. अपने आगमन सम्बन्धी सूचना अग्रिम ही अवश्य भेजें। ताकि आपके आवास तथा भोजन की सुव्यवस्था हो सके।
४. जो सज्जन होटल जैसी विशिष्ट आवास व्यवस्था चाहते हों वे हमें शीघ्र लिखें ताकि होटलों में उनका आरक्षण कराया जा सके। यह व्यवस्था सशुल्क होगी।
सम्पर्क: +919829063110, +919314535379
५. श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है। अपना छोटा–बड़ा अर्थ–सहयोग अवश्य दें। चैक या ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के नाम से ही भेजें।

मान्यवर! आपको विदित ही है कि आर्यजनों द्वारा नवलखा महल, उदयपुर, जहाँ महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने साढ़े छः मास विराजकर, लोक कल्याणार्थ सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थरत्न का प्रणयन सम्पूर्ण किया था, जैसे पवित्र ऐतिहासिक स्थल को उस महामना की स्मृति में एक अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक का स्वरूप प्रदान करने का निश्चय किया था, जहाँ से महर्षि दयानन्द की दिव्य विचारधारा का विश्व भर में प्रचार–प्रसार किया जावे।

प्रभु कृपा से व आप सभी के सहयोग से, **यह सत्यार्थ प्रकाश भवन आज दर्शनीय व प्रेरक स्थल के रूप में ख्याति प्राप्त है।** प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में आने वाले दर्शनार्थीगण, (**गत वर्ष ३०००० सहस्र से अधिक**) यहाँ से वैदिक विचारधारा का परिचय प्राप्त कर, प्रेरणा ले रहें हैं।

इसी क्रम में इस प्रेरणा स्थल पर प्रतिवर्ष अक्टूबर माह में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का आयोजन करने का निश्चय किया गया था ताकि इस ऐतिहासिक अवसर पर हम आर्यजन, एक ऐसे स्थल पर, जहाँ कभी ऋषिवर के चरण पड़े थे; उनकी वाणी ने लोगों के दिलों के तारों को झंकृत किया था, एकत्रित हो, करुणा वरुणामय देव दयानन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर सकें तथा विद्वानों के चरणों में बैठ, ऋषि मिशन के अग्र–प्रसारण का संकल्प ले सकें।

आयें, हम जीवन–व्रत लें, मानस बनावें, सहयोग प्रारम्भ करें, ताकि माँ वसुन्धरा की गोद को गौरवान्वित करने वाले, सम्पूर्ण मानवता के हितैषी, उस विषपायी देवता की स्मृति में इस केन्द्र को इतना दर्शनीय और सशक्त बनावें कि एक बार पुनः यहाँ से विश्व वैदिक संस्कृति का पाठ पढ़ सके।

२१वें सत्यार्थप्रकाश महोत्सव में सपरिवार इष्टमित्रों सहित अधिकाधिक संख्या में अवश्य पधारें।

निवेदक

महाशय धर्मपाल अध्यक्ष	स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती न्यासी	अशोक आर्य कार्यकारी अध्यक्ष
डॉ. अमृतलाल तापड़िया संयुक्त मंत्री एवं संयोजक	भवानीदास आर्य मंत्री	विजय शर्मा उपाध्यक्ष
नारायण मित्तल कोषाध्यक्ष	श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल न्यासी	श्रीमती शारदा गुप्ता महिला संयोजिका

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४२३५१०१, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org,
E-mail : satyarthnyas1@gmail.com

अंग्रेजी से उन्नति समझना हमारी भूल है

– डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

ईष्ट इंडिया कम्पनी भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आई थी। धीरे–धीरे पूरे भारत पर अधिकार कर लिया। भारत में पुर्तगाली फ्रांसीसी, डच, अंग्रेज चारों ओर छा गए। ईसाई मिशनरियाँ बनीं जिन्होंने ईसाई मत का प्रचार करना आरम्भ कर दिया। कान्वेण्ट स्कूल खोले जाने लगे इन्हें अंग्रेज सरकार का संरक्षण प्राप्त था अंग्रेज कुछ भी बोल सकते थे क्योंकि वह स्वतंत्र थे। उनकी मिशनरियों को पूर्ण रूप से राजकीय सहायता प्राप्त थी। अतः वह योजना बद्ध होकर पाश्चात्य संस्कृति व अंग्रेजी भाषा का प्रचार करते थे अनेक अंग्रेज अधिकारी भी अंग्रेजी भाषा व पाश्चात्य संस्कृति का प्रचार करने में तन–मन से सहायता कर रहे थे। लगभग दो सौ, ढाई सौ वर्ष में उन्होंने अपनी छाप भारतीयों पर डाल दी और अंग्रेजी को उन्नति की भाषा बताने लगे उनके अनुसार आज या उस समय जो भी आविष्कार हुए उनमें अंग्रेजी का बड़ा हाथ है विकास हेतु वह अंग्रेजी को ही सहायक मानते थे और इसका प्रभाव भारतीय जन मानस पर पड़ा। हमारी सोच पर इसका प्रभाव पड़ा हम भारतीय भी यही मान बैठे कि अंग्रेजी से ही चहुँ ओर उन्नति हो रही है हालांकि यह सोच उचित नहीं और न ही इसमें कोई सत्यता है हम आज स्वतंत्र है 1947 में हम स्वतंत्र हुए अब इस विषय पर निष्पक्ष होकर विचार करना होगा और यह भी मानना होगा कि विदेशियों की हमारे ऊपर अंग्रेजी का बोझ लादने की कुटिल चाल थी।

थोड़ा सा विचार करने की आवश्यकता है कि आज जो विकसित देश है वहाँ क्या अंग्रेजी इस प्रकार से छाई है जैसा कि हमारे यहाँ अधिकारियों की भाषा अंग्रेजी है अधिकांशतः कार्यालयों में आदेश संदेश व अन्य कार्य अंग्रेजी में ही हो रहे हैं। तहसीलों में खसरा खतौनी आदि उर्दू व अंग्रेजी में हो रहे हैं हिन्दी में अत्यल्प होते हैं। अंग्रेजी का महत्त्व कान्वेंट स्कूलों की शिक्षा में भी अधिक है और उसका प्रभाव हमारे घर परिवारों में जा रहा है। घरों में हम टूटी–फूटी इंग्लिश बोलने में बड़ा गर्व समझते हैं। आम बोलचाल में भी हम जोड़–तोड़ की भाषा का आनन्द लेते हैं वहीं पाश्चात्य भाषा का हमारे दैनिक जीवन व व्यवहार में भी प्रभाव पड़ रहा है यह हमारी सोच है कि अंग्रेजी विकास की भाषा है। उन्नति की भाषा है अपितु अंग्रेजी हमारी विकास की भाषा तो नहीं बल्कि अवनति की ओर अवश्य ले जा रही है यदि हमारी भाषा 80 प्रतिशत ग्रामीणों में बोलने वाली हिन्दी ही होती तो हम आज विश्व में विकसित देशों से भी आगे निकल गए होते।

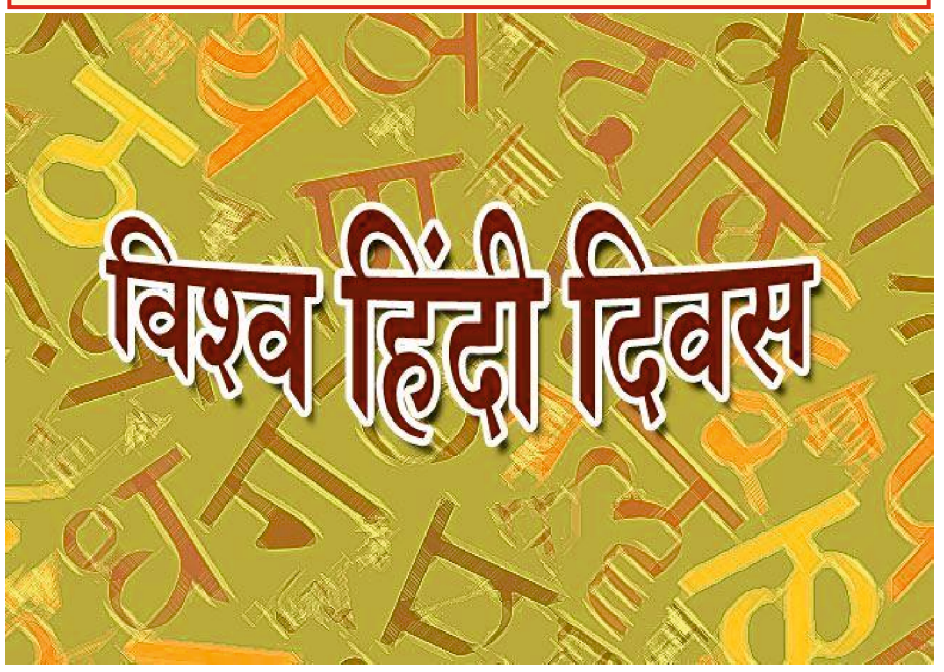

थोड़ा सा विचार करने की आवश्यकता है कि आज जो विकसित देश है वहाँ क्या अंग्रेजी इस प्रकार से छाई है जैसा कि हमारे यहाँ अधिकारियों की भाषा अंग्रेजी है अधिकांशतः कार्यालयों में आदेश संदेश व अन्य कार्य अंग्रेजी में ही हो रहे हैं। तहसीलों में खसरा खतौनी आदि उर्दू व अंग्रेजी में हो रहे हैं हिन्दी में अत्यल्प होते हैं। अंग्रेजी का महत्त्व कान्वेंट स्कूलों की शिक्षा में भी अधिक है और उसका प्रभाव हमारे घर परिवारों में जा रहा है। घरों में हम टूटी–फूटी इंग्लिश बोलने में बड़ा गर्व समझते हैं। आम बोलचाल में भी हम जोड़–तोड़ की भाषा का आनन्द लेते हैं वहीं पाश्चात्य भाषा का हमारे दैनिक जीवन व व्यवहार में भी प्रभाव पड़ रहा है यह हमारी सोच है कि अंग्रेजी विकास की भाषा है। उन्नति की भाषा है अपितु अंग्रेजी हमारी विकास की भाषा तो नहीं बल्कि अवनति की ओर अवश्य ले जा रही है यदि हमारी भाषा 80 प्रतिशत ग्रामीणों में बोलने वाली हिन्दी ही होती तो हम आज विश्व में विकसित देशों से भी आगे निकल गए होते। चीन, अमेरिका, जापान, जर्मनी, रूस, फ्रांस ऐसे देश हैं जो आधुनिक विज्ञान व टेक्नोलॉजी में विश्व में अग्रणी हैं और वहाँ की भाषा अंग्रेजी न होकर अपनी ही भाषाएं हैं वहां शिक्षा ज्ञान–विज्ञान टेक्नोलॉजी कुगफू आदि में सर्वत्र अपनी ही भाषा का प्रयोग होता है। भौतिक विज्ञान रसायन विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि सब अपने देश की मूल भाषा में हैं। अंग्रेजी में नहीं हैं। चीन व जापान के यंत्र संयंत्र उपकरणों पर वहां की मूल भाषा में ही विवरण लिखा होता है। यह देश अपनी मूल भाषा के प्रयोग के कारण ही भौतिक विकास में बुलन्दी पर है।

हम अंग्रेजी के अंग्रेजी भाषा के अंग्रेजी संस्कृति के सम्पर्क में 200–250 वर्ष तक रहे अतः पाश्चात्य संस्कृति व व्यवहार का प्रभाव पड़ा हमारी भाषा पर, अंग्रेजी शासन से पूर्व इंग्लैण्ड, जापान, यूनान आदि सभी स्थानों पर खुरपी, कुदाल, हंसिया, हल, बैल व घोड़ों से ही कृषि का कार्य होता था। सिंचाई के साधन भी हरट, टेंकली आदि ही थे। औद्योगिक क्रांति तो सर्वत्र एक साथ आरम्भ हुई। भारत, जापान, इंग्लैण्ड, फ्रांस सभी स्थानों पर औद्योगिक क्रांति ने एक साथ जन्म लिया यहाँ क्योंकि अंग्रेजों का शासन था अंग्रेजी भाषा का प्रचार हो रहा था। ईसाई मिशनरियाँ अपना सांस्कृतिक प्रचार कर रही थीं। भारतीय जनमानस पर इसका यही प्रभाव पड़ा कि यह जो वैज्ञानिक आविष्कार हो रहे हैं। औद्योगिक क्रांति हो रही है। अंग्रेजी संस्कृति अंग्रेजी भाषा को इसका कारण समझने लगे और भारतीयों का झुकाव अंग्रेजी भाषा की ओर होने लगा। परन्तु अंग्रेज यहाँ नहीं आते तब भी यहाँ वैज्ञानिक आविष्कारों का जन सामान्य हेतु प्रयोग होता और हमें आज की भांति अंग्रेजी का भ्रम न होता। हालांकि अंग्रेजी विकास का कारण नहीं है। यदि अंग्रेज यहाँ न होते तो हम विज्ञान को हिन्दी व संस्कृत में भली प्रकार से समझ सकते थे जो कि नहीं समझ पाये और वैज्ञानिक आविष्कार औद्योगिक साधन अस्त्र–शस्त्रों के लिए विदेशों पर निर्भर न रहना पड़ता।

जब विश्व में लोग जंगलियों की भांति रहते थे न कोई सभ्यता थी न उनकी संस्कृति ही थी हमारा देश सभ्यता संस्कृति में अत्याधिक विकसित था।

रामायण व महाभारत काल में शिक्षा ज्ञान विज्ञान बहुत आगे था। वैदिक काल जैसी राज्य व्यवस्था समाज की व्यवस्था, दण्ड विधान, कर व्यवस्था, भौतिक, रसायन, अर्थशास्त्र आदि जैसा विश्व में कहीं नहीं था। यहां सदैव से गुरुकुल व आश्रम ऋषि महर्षि रहे हैं जिन्होंने प्राचीन काल में अनेक शास्त्र लिखे, अन्वेषण किए। वैदिक गणित भारत की ही देन है ज्योतिष विज्ञान भारत का ही ज्ञान है। योग दुनियां को भारत की देन है। परमाणु का प्रतिपादन सर्व प्रथम कणाद ने ही किया शल्य काय चिकित्सा हिप्पोक्रेट से सहस्रों वर्ष पूर्व लिखे जा चुके थे। चरक उनमें काय चिकित्सा प्रधान तथा सुश्रुत संहिता शल्य चिकित्सा का ग्रन्थ है जिसमें से विदेशी शल्य को फ्रांस ले गए थे तथा वहां अंग–प्रत्यंग प्रत्यारोपड़ किया गया प्लास्टिक सर्जरी भी यहीं से गई। आत्मा परमात्मा प्रकृति पर विस्तृत प्रकाश इसी भूमि से हुआ। सत्य–अहिंसा का ज्ञान यहीं से फैला। शून्य का आविष्कार यहां से हुआ। डॉ. हरगोबिन्द खुराना जो भारतीय थे ने जीन्स की खोज की। जगदीश चन्द्र वसु, डॉ. भाभा, वाराहमिहिर आदि यहीं के वैज्ञानिक थे। भारत ज्ञान विज्ञान में धनी था जब देश परतंत्र हो गया तो वह अन्वेषण जो भारत में होते थे बाहर से यहां आने लगे। वेदादि शास्त्रों में दिया है कि समान गुण वाले तत्त्व अपने समान गुण धर्म वाले तत्त्व व स्रोत की ओर गति करते हैं। पर्वतों, नदियों, नहरों आदि का समस्त जल उसके अपने मूल स्रोत समुन्द्र की ओर गति करता है। अग्नि की गति ऊपर अर्थात् सूर्य की ओर होती है। चाहे मोमबत्ती लालटेन व अन्य अग्नि हो अग्नि का स्रोत सूर्य है। कोई भी स्वर हो आवाज हो आकाश में विलीन हो जाता है। तरंगों के रूप में दूर तक चला जाता है कोई भी पार्थिक तत्त्व हो ऊपर फेंकने पर सदैव नीचे अर्थात् पृथ्वी की ओर ही आता है यही अन्वेषण बाद में न्यूटन गैलीलियों ने किए। वेद में पहले से ही दिया है कि पृथ्वी गोल है परन्तु ईसाई मतानुसार पृथ्वी चपटी मानी जाती रही है। पृथ्वी गोल है इसको गैलीलियो ने बताया तो उसे नजरबन्द कर दिया गया था पश्चात न्यूटन ने जब बताया कि पृथ्वी गोल ही है। ईसाईयों को तब विश्वास हुआ कि पृथ्वी गोल है और पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती हुई वर्ष में सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि हम जिसको महानता का आदर्श मान बैठे हैं वह अंग्रेजी भाषा व संस्कृति विकास व उन्नति का माध्यम नहीं है न ही विकास का कारण है विश्व में कहीं भी नहीं। हमें विश्व में सबसे आगे आना है तो अपनी मातृ भाषा हिन्दी व संस्कृत की ओर ध्यान देना होगा।

– चन्द्रलोक कालोनी, खर्जुा (उ. प्र.)

केरल में आई जल प्रलय से मानवता हुई त्रस्त
पीड़ितों को राहत पहुँचाने के लिए आर्य समाज ने बढ़ाये कदम

केरल में 100 साल की सबसे बड़ी आपदा से जूझ रहे केरल वासियों को सहायता पहुँचाने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ने विस्तृत योजना बनाई है। वहाँ पर आम व्यक्तियों की सहायता करने के लिए सार्वदेशिक सभा की तरफ से एक टीम शीघ्र केरल जाने के लिए तैयार है। पीड़ितों को भोजन, नये वस्त्र, दवाईयाँ तथा अन्य आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराने के लिए आर्यजनों से अपील है कि वे दिल खोलकर सहयोग प्रदान करें जिससे पीड़ित केरल वासियों को सहायता प्रदान की जा सके। अपना सहयोग चैक/ड्राफ्ट तथा धनादेश के द्वारा 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम अति शीघ्र भिजवाने की कृपा करें। आप अपना सहयोग सीधे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के **बचत खाता संख्या : 60011010000 5689, IFSC Code :- BKID0006001, बैंक ऑफ इण्डिया, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2,** में भी जमा करा सकते हैं।

जुकाम : कुछ गलत धारणाएं

रोग वस्तुत: इलाज है और रोग के लक्षण वस्तुत: शरीर को निर्मल बनाने के साधन हैं। रोग शत्रु नहीं है, मित्र है। उससे भयभीत होने की किंचित आवश्यकता नहीं है। वह अवस्था इस बात का द्योतन करती है कि शरीर अपने कचड़े को साफ करके स्वत: निर्मल होने का प्रयास कर रहा है।

जहाँ नाक बहने लगी, गले में खराश हुई, हल्का ज्वर आया और साथ में थोड़ी खांसी शुरु हुई, हम कहने लगते हैं कि 'मुझे जुकाम ने पकड़ रखा है। जुकाम के ये विविध लक्षण वस्तुत: शरीर की उस अवस्थिति की सूचना देते हैं, जिनके फलस्वरूप ये लक्षण प्रकट होते हैं। वस्तुत: हमारी दृष्टि मूल कारण पर नहीं जाकर जिसके फलस्वरूप जुकाम होता है, कारण के प्रतिफल पर जाती है, जो प्रत्यक्ष दिखता है। जुकाम का असली रूप तो कारण है, प्रतिफल नहीं। जुकाम का इलाज लक्षण दूर करने से नहीं, बल्कि कारण को दूर करने से होगा।

इस बात को स्पष्ट समझ पाने के लिए आवश्यक है कि 'रोग की प्रकृति' जानी जाये। इस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा जा चुका है, पर सर्वसाधारण को चिकित्साशास्त्र का दर्शन पूरा-पूरा बुद्धिगम्य नहीं हो पाया है। रोग की प्रकृति समझने के लिए उक्त दर्शन को समझ अति आवश्यक है।

साधारणतया लोगों के मन में यह धारणा बैठी हुई है कि ठंडक के कारण जुकाम होता है। ठंडक किसी तरह शरीर में प्रवेश कर गई है, रक्त के प्रवाह में आ गई है और फेफड़े, जोड़ों आदि स्थानों पर उसने अपना घर बना लिया है।

जुकाम है क्या, होता क्यों है, उसका संकेत किस ओर है, आदि प्रश्नों की ओर वस्तुत: किसी व्यक्ति का ध्यान नहीं जाता। सर्दी के कारण जुकाम हुआ, इतनी बात को लोग समझ लेते हैं।

लेकिन लक्षण मात्र इस ओर संकेत करते हैं कि शरीर पर रोग का आक्रमण हो गया है। पर ऐसी कोई बात नहीं है। जुकाम या सर्दी कोई ऐसी चीज नहीं है, जो शरीर में प्रवेश कर जाये।

रोग में जो लक्षण प्रकट होते हैं, वे शरीर का कचड़ा साफ करने के लिए प्रकृति द्वारा अपनाये गये साधन हैं। कचड़ा साधारणत: शरीर से निकलते ही जाना चाहिए और ऐसी स्थिति नहीं आनी चाहिए कि शरीर में कचड़ा जमा हो जाये। पर अगर किसी प्रकार कचड़ा जमा हो जाता है, तो प्रकृति उसे निकाल फेंकने के लिए जिस साधन को अपनाती है, उसे हम मोटे तौर से रोग की संज्ञा दे देते हैं। इस संदर्भ में देखने पर आप इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि रोग वस्तुत: इलाज है और रोग के लक्षण वस्तुत: शरीर को निर्मल बनाने के साधन है। रोग शत्रु नहीं है, मित्र है। उससे भयभीत होने की किंचित आवश्यकता नहीं है। वह अवस्था इस बात का द्योतन करती है कि शरीर अपने कचड़े को साफ करके स्वत: निर्मल होने का प्रयास कर रहा है।

इसी सिद्धान्त को जुकाम पर भी लागू करें। लोगों की धारणा है कि जैसे घर में बिल्ली घुस जाती है, इसी प्रकार जुकाम शरीर में घुसता है, बिल्कुल भ्रामक है। जब हमें जुकाम होता है तो वस्तुत: हम स्वास्थ्य लाभ करते होते हैं, सच बात तो यह है कि जुकाम होने से पहले हम बीमार अथवा अस्वस्थ होते हैं। वह ऐसी स्थिति होती है, जिसमें शरीर में कचड़ा जमा होता है और उसे बाहर निकल जाने का कोई निकास प्राप्त नहीं हुआ करता। अगर जुकाम न हुआ होता और शरीर के इस कचड़े को बाहर निकालने का मार्ग न मिला होता, तो उस कचड़े के बढ़ने पर मृत्यु ही हो गयी होती। जुकाम वस्तुत: हमारे शरीर को निर्मल बनाता है।

हाइड्रोपैथिक एनसाइक्लोपीडिया (जल चिकित्सा विश्वकोष, भाग 2, पृष्ठ 64) में डॉ. आई. टी. ट्राल ने कहा है -

'बीमारी का हर दशा वस्तुत: शरीर से कचड़ा निकाल फेंकने का प्रकृति का प्रयास है। ऐसी स्थिति में कोई भी दर्शन सम्मत चिकित्सा पद्धति मात्र इतना ही कर सकती है कि वह शरीर को ऐसी सहायता दे कि वह कचड़ा निकालने का काम सफलतापूर्वक कर सके। इसके ठीक विपरीत एलोपैथिक चिकित्सा शरीर की इस स्वाभाविक क्रिया में व्यवधान उत्पन्न करती है और दबाती है, पर जल चिकित्सा की पद्धति यह है कि कचड़ा निकालने के शरीर के काम में सहायता देकर वह जल्दी से जल्दी सारा कचड़ा निकालकर शरीर को कचड़ाविहीन बनाता है। शरीर से कचड़ा बाहर निकालने के काम को जल चिकित्सा कभी नई दिशा देता है, कभी उसमें अभिवृद्धि करता है और कभी कुछ परिवर्तन करता है। सिद्धान्त रूप में हम यह मानते हैं कि रोग के लक्षण वस्तुत: शरीर को नीरोग बनाने की दशा में शरीर का प्रयास है। यह प्रयास लक्ष्य के अनुरूप नहीं हो सकता, अत: व्यवधान दूर करने के लिए प्रकृति सहायता अपेक्षित है।'

यह प्राकृतिक चिकित्सा का दर्शन है। इसके आधार पर यदि विचार किया जाये तो आप देखेंगे कि प्रकृति आपसे जिस प्रकार जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा करती है, उसके विरुद्ध कई सप्ताह, कई मास जीवन व्यतीत करने के फलस्वरूप आपका शरीर विजातीय द्रव्यों से भर गया था। उसके कारण आपका रक्त गाढ़ा हो गया था, जिससे अत्यावश्यक अंगों के क्रिया कलाप में व्यवधान उपस्थित हो गया था। वह कचड़ा गाँठों में जमा हो गया था और पूरे शरीर के कोष उस कचड़े से अभिभूत हो गये थे। इस प्रकार कचड़ा जमा होने का मुख्य कारण गलत खाना तथा अधिक मात्रा में भोजन करना है। इस प्रकार का अवस्थिति का मुख्य कारण भोजन ही है। व्यायाम न करने से, गंदी हवा में रहने से, कब्ज के कारण तथा त्वचा के पूर्ण सक्रिय न होने से यकृत और गुर्दे पर अधिक श्रम लादने के फलस्वरूप कचड़ा जमा होने के कार्य में सहायता मिलती है। क्योंकि, इनके फलस्वरूप विजातीय द्रव्य ठीक रूप में पूरा-पूरा शरीर से निकल नहीं पाता और यह स्थिति आ जाती है जो शरीर को असह्य होती है। यह खतरे की स्थिति है। ऐसी स्थिति में या तो शरीर विजातीय द्रव्य को निकाल फेंके या मृत्यु का वरण करे। आत्मरक्षा की अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप जितना सम्भव हो सकता है, उतनी तेजी से शरीर उस कचड़े को निकाल फेंकने का प्रयास करता है। ऐसी स्थिति आने पर हम उस लक्षण को रोग की संज्ञा देकर उसे दबाने का प्रयास करते हैं और अपने तरीके से कचड़ा साफ करने के प्रकृति के कार्य में सहायता न देकर उसे रोकने की कोशिश करते हैं।

जुकाम मात्र शरीर की एक प्रतिक्रिया है। जो दोष आ गया था, उससे मुक्ति पाने का एक प्रयास है। जब ऐसी स्थिति शरीर की हुई कि शरीर से कचड़ा निकालने के लिए जुकाम हो, तो जुकाम हुआ।

यह वस्तुत: इलाज था।

मान लीजिए कि कल आप पूर्णत: स्वस्थ थे और आज आपको बड़ा तगड़ा जुकाम हो गया। इसका सही अर्थ यह हुआ कि वस्तुत: कल वह दिन था, जब आप सचमुच बीमार थे और आज प्रकृति का कदम उस बीमारी से मुक्ति की ओर उठ गया है। कल शरीर की स्थिति सचमुच खतरनाक थी, क्योंकि शरीर विषमय विजातीय द्रव्य से लदा था। और आज वह दिन है, जब आप उससे मुक्त हो रहे हैं। अत: जुकाम से डरने के बजाए आपको उसका स्वागत करना चाहिए, क्योंकि आपके शरीर का यह सुधार की दिशा में उठा हुआ कदम है। यह एक लक्ष्य है और हम सबको यह कामना करनी चाहिए कि जुकाम हो।

जुकाम तभी होता है जबकि शरीर को विजातीय द्रव्य संभाले रहना असह्य हो जाता है और ऐसी स्थित आ जाती है कि विजातीय द्रव्य किंचित् और संभाले रहने से सारा संतुलन ही बिगड़ जाये।

अत: अब आप समझ गये होंगे कि जुकाम का कारण शरीर का विजातीय द्रव्य से भर जाना है।

गलत धारणाएँ

(1) नम हवा से जुकाम नहीं हो सकता जब हम सांस से हवा खींचते हैं, तो फेफड़ों तक पहुँचने से पूर्व वह सदा नम हो जाती है। इस दृष्टि से प्रकृति ने श्लेष्मा वाली झिल्लियों की व्यवस्था की है। अत: हवा चाहे वह मुँह के द्वारा या नाक के द्वारा फेफड़े तक पहुँचे, नम होती है। हवा पहले से कितनी भी नम क्यों न हो, फेफेड़े तक पहुँचने से पूर्व प्रकृति अपने ढंग पर नम बनाती ही है।

(2) पैर भींगे रहने से जुकाम नहीं होता प्राय: आदमियों और औरतों के पैर गीले होते रहते हैं। सबको जुकाम नहीं होता। यदि पैर भींगने से जुकाम होता तो सबको जुकाम होना चाहिए था। जो लोग ऐसा मानते हैं कि पैर गीला रहने से जुकाम होता है, वे भी इस तर्क पर कहते हैं कि जुकाम केवल उन्हीं को होता है, जिनके शरीर में कुछ खराबी होती है। अत: जुकाम का कारण शरीर की खराबी है, न कि पैर का गीलापन।

साधारणत: लोग समझते हैं कि भीगा कपड़ा पहनने से जुकाम होता है। पर, यह बात नितांत भ्रमात्मक है। गर्मियों में हमारी गंजी या नीचे पहने जाने वाले कपड़े पसीने से प्राय: गीले रहते हैं, पर जुकाम नहीं होता। पसीने से कपड़े गीले होने में और पानी से गीले होने में क्या अन्तर है?जब हम स्नान करते हैं, तो हमारी पूरी त्वचा गीली हो जाती है, पर नहाने से हमें जुकाम नहीं होता है।

(3) रात की हवा जुकाम का कारण नहीं है - भला कैसे माना जा सकता है?रात को जो भी हवा होगी, वह आखिर हवा ही तो होगी। क्या प्रकृति दिन में और रात में भिन्न-भिन्न हवाएं चलाती है?विश्लेषण से स्पष्ट है कि रात और दिन की हवा में कोई अंतर नहीं होता, बल्कि रात की हवा में गर्दगुबार कम होती है और वह दिन की हवा की अपेक्षा अधिक शुद्ध होती है।

(4) ठंडक जुकाम नहीं पैदा कर सकती - हमारी त्वचा की बनावट ऐसी है कि वह तापमान के अनुरूप शरीर को बनाये रखती है। हम प्राय: गरम स्थलों में खुले ठंडे में और ठंडे से गरम में आते-जाते रहते हैं और जितने लोग ऐसा करते हैं, उनमे अधिकांश जुकाम के शिकार नहीं होते। अत: ऐसी धारणा सर्वथा भ्रामक है।

(5) कपड़ा बदलने से जुकाम नहीं होता - कुछ लोग कहते हैं कि, हम अति गरम कपड़ा पहनते थे, जरा हल्का ठंडा कपड़ा पहना तो जुकाम हो गया। यदि किसी ने कपड़ा बदला और दूसरे दिन जुकाम हो गया, तो क्या इसका अर्थ यह हुआ कि कपड़ा बदलने मात्र से जुकाम हो गया। हजारों आदमी क्या इस प्रकार कपड़े बदलते हैं, पर उनमें सभी को जुकाम नहीं होता। यह स्पष्ट है कि जुकाम का कारण भिन्न है।

जुकाम से मुक्ति का उपाय

अत: यह स्पष्ट हो जाने पर कि जुकाम के लिए उत्तरदाई ये विशेष अवस्थाएं नहीं हैं, बल्कि शरीर की आंतरिक स्थिति है। हमें यह विचार करना चाहिए कि जुकाम से मुक्ति पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

भोजन

जुकाम से मुक्ति पाने के लिए सबसे सरल उपाय है कि 2-3 दिनों तक भोजन ही बंद करदिया जाये ताकि शरीर अपनी पूरी ताकत शरीर शोधन में लगा सके। जितने दिन उपवास किया जाये, उतने दिन हल्के गुनगुने पानी का एनिमा लेते रहना चाहिए।

यदि उपवास न कर सकें, तो 2-3 दिनों तक फल अथवा उबली सब्जी खाकर रह जायें। फल और सब्जी क्षारवर्धक भोजन है और अन्न, चीनी, मैदा आदि अम्लकारक। शरीर में अम्ल की वृद्धि ही वस्तुत: शरीर को रुग्ण बनाती है। अत: फल-सब्जी आदि के भोजन से आप शरीर में क्षारवर्धन करके संतुलन ठीक कर सकते हैं। फलों में अमरूद, सेब, नासपाती आदि सर्वोत्तम है। सब्जी में लौकी, नेनुआ, परवल, हरे शाक, शलजम, टमाटर, गाजर कुछ भी दिये जा सकते हैं।

विटामिन-सी शरीर के विष को बाहर निकालता है और जुकाम में शरीर विजातीय द्रव्यों से लदा होता है, अत: हल्के गुनगुने पानी में नींबू का रस अथवा मोसम्मी का रस लेना जुकाम से मुक्ति पाने में बड़ा सहायक होता है।

फलाहार-काल में भी एनिमा लेते रहना चाहिए।

जुकाम का उपचार बड़ा सीधा-सादा एवं सरल है। बारीक पिसी मिट्टी को आटे की तरह गूथ लें और उसकी एक इंच मोटी पट्टी पेड़ू पर आधा घंटा रखें और उसके बाद एनिमा ले लें। इससे विजातीय द्रव्य निकलने के लिए एक स्रोत मिलेगा और आप जल्द स्वस्थ हो जायेंगे। - ***आरोग्य से साभार***

विश्व हिन्दी पिकनिक?

– डॉ. वेदप्रताप वैदिक

मॉरिशस में जो हुआ, वह 11वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन था। वह तीन दिन चला। 18, 19 और 20 अगस्त, 2018। लेकिन उसे महत्व कैसा मिला? जैसा कि किसी गाँव या छोटे शहर की गोष्ठी–जैसा! क्यों? सरकारी लोग इसका कारण अटलजी को बताते हैं। उनका कहना है कि अटलजी के अवसान के कारण देश ने उस सम्मेलन पर कोई ध्यान नहीं दिया। सारे अखबार और टीवी चैनलों पर अटलजी ही अटलजी दिखाई पड़ रहे थे। यह सच है लेकिन उसी दौरान पाकिस्तान में इमरान खान की शपथ भी हुई। उस पर सारे अखबार और चैनल क्यों टूट पड़े? क्या हमारा विश्व हिन्दी सम्मेलन इतना गया–बीता है कि उस पर हिन्दी अखबारों और चैनलों ने भी अपनी आंखें फेर लीं? कुछ हिंदी अखबारों में थोड़ी–बहुत खबर छपी, वह भी उल्टी–सीधी। आज मैंने इंटरनेट पर तलाश की तो पता चला कि मोरिशस में घोर अव्यवस्था रही। जो लोग भी गए थे, उन्होंने बड़ा अपमानित महसूस किया। जिन पोस्टरों का बड़ा प्रचार किया गया था, उन पर अज्ञेयजी और नीरज जी जैसे प्रसिद्ध कवियों के नाम ही गलत–सलत लिखे गए थे। कुछ मित्रों ने मॉरिशस से फोन करके बताया कि सिर्फ दक्षिणपंथी साहित्यकारों का वहां जमावड़ा था। दक्षिणपंथियों याने भाजपाई और संघी साहित्यकार! देश के अनेक मूर्धन्य साहित्यकारों, हिन्दीसेवियों और हिन्दी पत्रकारों को निमंत्रण तक नहीं भेजे गए। मैंने जब भी हिन्दी के लिए देश में कोई आंदोलन चलाया, हमेशा सभी राजनीतिक दलों और सभी हिंदीप्रेमियों का सहयोग लिया। भोपाल का 10 वां और मोरिशस का यह 11 वाँ सम्मेलन भाजपा सरकार ने आयोजित किया लेकिन अन्य सरकारों द्वारा आयेाजित सम्मेलनों– जैसा सर्वसमावेशी चरित्र इस सम्मेलन का नहीं रहा। इसका दोष विदेश मंत्री सुषमा स्वराज को देना उचित नहीं है। सुषमा–जैसे हिन्दी प्रेमी इस सरकार में कितने हैं ? वे हिन्दी की विलक्षण वक्ता हैं। वे मेरे साथ अनेक हिन्दी–आंदोलनों में कंधा से कंधा मिलाकर काम करती रही हैं। वे स्वयं वर्तमान सरकार की संकीर्ण और अहमन्य संस्कृति की शिकार हैं। उन्हें कोई स्वतंत्र विदेश मंत्री की तरह काम करने दे, तब तो वे कुछ करके दिखाएं। डर के मारे सारे मंत्री जी–हुजूरी में लगे हैं। 43 साल से चल रहा यह विश्व हिन्दी सम्मेलन शुद्ध रुप से विश्व हिन्दी पिकनिक बन गया है। इस पर संघ और भाजपा या जनसंघ की हिन्दी नीति का कोई असर कहीं दिखाई नहीं पड़ता। गैर–भाजपाई सरकारें इसे कम से कम सर्वसमावेशी पिकनिक का रुप तो दे देती थीं। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन (नागपुर, 1975) में जो प्रस्ताव पारित हुए थे, वे आज तक लागू नहीं हुए हैं। देखें, अगली सरकार क्या करती है?

Dayananda the Epoch Maker

- Puran Chand Advocate

The present age can be analysed in following important spheres of activities. These activities are attracting the best attention of the thinking public:-

1. The age of Science- the advancement of physical science.
2. The age of Liberty and Democracy.
3. The age of economics.
4. The age of planning
5. The age of social welfare.

In all these sphere, Rishi Dayananda's contribution has been remarkable and it appears that if the teachings of Rishi Dayananda are adhered to and followed, the present age from the stand point of the above noted five different spheres shall reach perfection.

We shall take up these spheres one by one:-

1. Age of Science

The advancement of physical science has brought about great material progress. It has enabled us to know about and appreciate much about the visible world but has not succeeded in taking us right upto the creator. In the words of Jeans a famous philosopher of Great Britain "The scientists have succeded in going to the end of the picture but the painter is still beyond." The consequence has been that the desing of intelligence is ecident but the intelligence and designer is beyond the sight. The scientists are apt to say, "God is no where." They ought to have said "God is now here". Rishi Dayananda has drawn attention to this deficiency in the first principle of Arya Samaj:-

"God is the cause of all knowledge and of all that is known through knowledge."

If this attitude as advocated by Rishi Dayananda has been available to the scientists or brought to their notice now this advancement of science would be blessing. Science would not only provide power over nature but would also provide vide breake for its proper use.

2. Age of Liberty or Democracy or Freedom.

(a) The advancement of science has led to the removal of physical barriers. The whole world is now easily accessible and the distances of time and space have been conquered. The advancement of science has not provided any basis for making the whole world appear as one. The world 'Universe' denotes that there is one universe. The love of country or national patriotism is to be replaced by love of the world as a whole. Rishi Dayananda has laid down in the sixth principle of Arya Samaj the welfare of the whole world as the main object of the Arya Samaj or the society of the righteous virtuous.

(b) Democracy means Government of the people, the emblem of democracy is the importance of vote. To have a right of vote is everybody's birth right. But what about the qualification for it or preparation for it? Vote is a previlege no doubt but it is a duty. It requires training and character. It requires sound intellect and pure heart free from all prejudices of sex, colour, cast and creed. Hence character is of the greatest value. Rishi Dayananda has insisted on SADACHAR or Good character as an essential condition to obtain the right to vote. This condition of character is being ignored in this present day democracy and the result is choas, confusion, conflict and rampant selfishness.

(c) Self Government must be supplemented with Government over self. Government over self means the regulation heart is the capital, God is the sovereign, soul is the capital, soul is the Prime Minister and heart is the Home minister. If the capital and through it the whole empire or realm of individual kingdom is to be regulated, the existence of the soverign and the knowledge of His mandate has to be laid stress on. Even in this materialistic age the system of oath is the connecting link between the moral and secular. If the significance and the sanctity of this oath is appreciated it is not confined to the lip and the paper and goes down to the human heart, the working of the human heart shall be regulated, Good character shall be ensured. Rishi Dayananda has laid stress on this in the sixth chapter of the Satyarth Prakash and also in principles from 5 to 9 of the Arya Samaj. In the light of the above it can be understood that there shall be no necesssity to obliterate distinctions of colour, cast, creed or property but distiction will continue without creating feeling of difference. From Swarajya to Ram Rajya is the crying need of the day. Ayodhya (Ajudhya) was the capital of the Ram Rajya. Ajudhya or Ayodhya means where there is no scope of fight, agression or attack not to say or victory. If evil tendencies cannot attack or conquer it is Ayodhya or Ram Rajya. If there is Ram Rajya in majority of the individual inside there will be Ram Rajya outside.

3. Age of Economics

The advancement of science has also great influences in the realm of economics, science or art with the help of science has been successful in making things more beautiful and attractive. It has added to the growth it has helped in the increase of quantity. It has also improved the quality but it has to be kept in view again science fulfils needs.

Need fulfilled creates more needs,
More needs more greed,
More greed more conflict.

If conflict is not avoided, if individual satisfaction is not ensured there is no economic prosperity worth the name rather it is an emblem of adversity in the midst of plenty which is all the more painful. Here again the working of the human heart is to be achieved in the real sense of the term. Emphasis has to be laid on moral values. they are not to be ignored. Rishi Dayananda has laid stress on it throughout his writing and speeches.

4. The Age of Planning

The advancement of science and advancement of liberty or Swarajya are no doubt of great help and a great impetus for planning, but real planning again requires man-culture or man planning as the first item of importance in any plan not only in five year-plan but there is place for it in hundred-year-plan, the whole length of the life of an individual. There is talk of agriculture, horticulture but what about man-culture. Rishi Dayananda has laid stress in man-culture. He has suggested and prescribed the following methods:-

Shiksha
Sanskar
Yogya- Self sacrifice in spirit of renunciation.
Yoga-Constant and psychological unity with Divine power and Existence and His mandate.

By abolition of the caste on the basis of birth, casteism is removed and cured.

By insisting on the unity of God narrow communalism is removed.

By insisting on one national language Hindi, linguism is removed.

By insisting on the welfare of the world as a whole narrow patriotism or countryism or provincialism is removed.

Our Prime Minister is deeply concious of the painful effects of these 'isms!' He always repeat them. rishi Dayananda in his memorable book Satyarth Prakash has prescribed remedies for all these ills not only he has laid stress on the cure of the ills but he has also laid stress on the correct methods of building individual character or nation. He not only insisted on the abolition of caste based on birth, but also emphasised the importance of Varanashram Dharma, the best system of social reconstruction.

5. Age of Social Welfare

There is great cry for it. But social welfare or for the matter of that individual welfare depends upon the well-doing to the individual. The conditions and circumstances of our outward life depends upon our action "Hal-Chal" go together. Hal condition depends upon Chal or conduct or character. The ideas underlying "Neta or Neeti" are also intimately connected with these basic principles. "How do you do?" is connected, with how are you? Both are important questions. The reply, "I am alright" is also very significant and the avoidance of wrong evils. If this repetition is not merely mechanical, welfare is more clearly understood.

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

राजा वरुण सब-कुछ जानता है

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतंकम्।
द्वौ सन्निषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद् वेद वरुणस्तृतीयः।।
—अथर्व० ४/१६/२

ऋषिः—ब्रह्मा।। देवता—वरुणः।। छन्दः—त्रिष्टुप्।।

विनय—पाप से वास्तव में डरने वाले मनुष्य संसार में विरले ही होते हैं। प्रायः लोग पाप करने से नहीं डरते, किन्तु पापी समझे जाने से डरते हैं। जहाँ कोई देखने वाला न हो वहाँ अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाना, कोई पाप कर लेना, साधारण बात है। पाप व अपराध कर्म से बचने की कोई कोशिश नहीं करता; कोशिश तो इस बात की होती है कि हम वैसा करते हुए कहीं पकड़े न जाएँ। यही कारण है कि मनुष्य अपने बहुत–से कार्य छिपकर अकेले में करने को प्रवृत्त होता है, परन्तु यदि उसे इस संसार के सच्चे, एकमात्र राजा वरुणदेव की जानकारी हो तो वह ऐसे घोर अज्ञान में न रहे। यदि उसे मालूम हो कि वे जगत् के ईश्वर वरुण भगवान् सर्वव्यापक और सर्वद्रष्टा हैं तो वह पाप के आचरण करने से डरने लगे; वह एकान्त में भी कभी पाप में प्रवृत्त न हो सके। यदि हम समझते हैं कि हम कोई काम गुप्त रूप में कर सकते हैं तो सचमुच हम बड़े धोखे में हैं। उस सर्वद्रष्टा, सर्वव्यापक वरुण से तो कुछ भी छिपाकर करना असम्भव है। जब हम दो आदमी कोई गुप्त मन्त्रणा करने के लिए किसी अँधेरी–से–अँधेरी कोठड़ी में जाकर बैठते हैं और सलाहें करने लगते हैं, तो यद्यपि हम समझ रहे होते हैं कि हम दोनों के सिवाय संसार में और कोई इन बातों को नहीं जानता, तथापि इन सब बातों को वह वरुण देव वहीं तीसरा होकर बैठा हुआ सुन रहा होता है। यदि हम वहाँ से उठकर किसी किले में जा बैठें, या किसी सर्वथा निर्जन वन में पहुँच जाएँ तो वहाँ पर भी वह वरुणदेव तो तीसरा साक्षी होकर पहले से बैठा हुआ होता है। उससे छिपाकर हम कुछ नहीं कर सकते। यदि हम दूसरे किसी आदमी को भी कुछ नहीं बताते, केवल अपने ही मन में कुछ सोचते हैं, तो वह वरुण उसे भी जानता है, सब सुनता है। हमारे चलने या ठहरने को, हमारी छोटी–सी–छोटी चेष्टा को वह जानता है। जब हम दूसरों को धोखा देते हैं, ठग लेते हैं और समझते हैं कि इसका किसी को पता नहीं लगा, तब हम स्वयं कितने भारी धोखे में होते हैं। क्योंकि, उस वरुण को तो सब–कुछ पता होता है और हमें उसका फल भोगना पड़ता है।

शब्दार्थ—**यः तिष्ठति, चरति**=जो मनुष्य खड़ा है, या चलता है, **यः च वञ्चति**=जो दूसरों को ठगता है **यः निलायं चरति**=जो छिपकर कुछ करतूत करता है **यः प्रतंक चरति**=जो दूसरों को भारी कष्ट आदि देकर अत्याचार करता है और **द्वौ सन्निषद्य**=जब दो आदमी मिलकर, एक–साथ बैठकर, **यत् मन्त्रयेते**=जो कुछ गुप्त मन्त्रणाएँ करते है। **तत्**=उसे भी **तृतीयः**=तीसरा होकर **वरुणः राजा**=सर्वश्रेष्ठ सच्चा राजा परमेश्वर **वेद**=जानता है।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

लागत मूल्य 4100/- रुपये

भारी छूट पर उपलब्ध

4100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/- रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।